DR. SUMAN LALRAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Bara Chakia
BRABU-Muzaffarpur

B.A.(Hons.) Part – I
Sub. – SANSKRIT
Paper – I
कारक सूत्र-व्याख्या
(तृतीया विभक्ति)

5×3=15 Marks

14. इत्थंभूतलक्षणे (2/3/21)

जिस चिह्न से किसी व्यक्ति के विशेष रूप की पहचान का बोध हो, तो उस चिह्न के लिए तृतीया विभक्ति होती है अर्थात् किसी विशेष प्रकार (रूप) को प्राप्त हुए के ज्ञापक (सूचक) से तृतीया विभक्ति होती है। यथा– जटाभिः तापसः (जटाओं से तपस्वी सूचित होता है) अर्थात् यह जटाओं से गम्यमान तपस्वित्व से युक्त है, ऐसा प्रतीत होता है। यहाँ तपस्वित्व का रूप विशेष प्रकार जटाओं से सूचित होता है, अत एव 'इत्थंभूतलक्षणे' सूत्र से 'जटाभिः' में तृतीया हुई है। इसी प्रकार– पुस्तकैः छात्रः। सा वाचा विदुषी प्रतीयते। स्वरेण रामभद्रमनुहरति (स्वर में राम के सदृश है), शिखया हिन्दू– आदि उदाहरणों में 'इत्थंभूतलक्षणे' सूत्र से पुस्तकैः, वाचा, स्वरेण एवं शिखया में तृतीया विभक्ति हुई है।

— o —

क्रमशः जारी